

डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 5, पुस्तक विशेषताएँ

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

हम यहाँ अपना सिनॉटिक गॉस्पेल कोर्स जारी रख रहे हैं। अब तक, हमने यूनिट 1, ऐतिहासिक यीशु; यूनिट 2, न्यू टेस्टामेंट की यहूदी पृष्ठभूमि; यूनिट 3, व्याख्या का परिचय, और कथा शैली के बारे में कुछ देखा है; और फिर मैथ्यू 2, बुद्धिमान पुरुषों की यात्रा पर एक नज़र डाली है। और फिर, पिछली बार, हमने यूनिट 4, सिनॉटिक्स के लेखकत्व और तिथि पर काम शुरू किया था।

वास्तव में, हमने सिनॉटिक्स के लेखकत्व और तिथि को कवर किया है, लेकिन मेरे पास सिनॉटिक गॉस्पेल की विशेषताओं पर भी एक बहुत लंबा खंड है। इसलिए हम अभी यहीं से शुरुआत करना चाहते हैं। सिनॉटिक गॉस्पेल की विशेषताएँ, और हम उन्हें वैसे ही करेंगे जैसे हमने पहले किया था।

मैथ्यू की विशेषताएँ, मार्क की विशेषताएँ, ल्यूक की विशेषताएँ। तो, मैथ्यू की विशेषताएँ। आइए लेखक मैथ्यू के बारे में थोड़ा सोचें।

और इसका उत्तर यह है कि हम उसके बारे में ज़्यादा नहीं जानते। नए नियम की चार अलग-अलग किताबों में उसका नाम सात बार उल्लेखित है, लेकिन वास्तव में इनमें सिर्फ़ दो ही अवसर शामिल हैं - एक, उसका धर्म परिवर्तन, और दूसरा, प्रेरितों की सूची।

जैसा कि प्रेरितों की सूची में उसे बुलाया गया है, मार्क 2:14 में हलफर्ड का लेवी, इसलिए वह हलफर्ड का पुत्र और छोटे याकूब का भाई हो सकता है। मत्ती 10:3, मरकुस 3:18, लूका 6:15 और प्रेरितों के काम 1:13 में याकूब को हलफर्ड के पुत्र के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। उसके धर्म परिवर्तन के बारे में, हमें मत्ती 9:9, मरकुस 2:14, लूका 5:27 और 29 में एक कथा मिलती है। मत्ती एक कर संग्रहकर्ता था, और अपने धर्म परिवर्तन के बाद, उसने अपने पुराने दोस्तों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया ताकि वे यीशु से मिल सकें। तो, यह दिलचस्प तस्वीर है कि मुझे क्या लगता है कि विश्वासियों को, कुछ अर्थों में, जब वे मसीह के पास आते हैं, तो क्या करना चाहिए।

और यह बात यहाँ महत्वपूर्ण है। मत्ती 10:3 में प्रेरितों की सूची ही एकमात्र ऐसी सूची है जिसमें सार्वजनिक और कर संग्रहकर्ता शब्दों का प्रयोग किया गया है। अन्य तीन सूचियों, मरकुस 3:18, लूका 6:15, और प्रेरितों के काम 1:13, केवल उसे सूचीबद्ध करती हैं।

इन चार सूचियों में, प्रेरितों को कभी-कभी थोड़े अलग क्रम में रखा जाता है, लेकिन उन्हें हमेशा चार के तीन समूहों में रखा जाता है और कभी भी समूहों के बीच मिश्रित नहीं किया जाता है। हम इसका महत्व नहीं जानते, लेकिन फिर भी यह ऐसा ही लगता है। मैथ्यू हमेशा दूसरे समूह में शिष्य 7 या शिष्य 8 के रूप में होता है, यानी दूसरे समूह में अंतिम या अंतिम से अगले के रूप में।

मूल रूप से हम मैथ्यू के बारे में यही जानते हैं। जाहिर है कुछ परंपराएँ और ऐसी ही बातें हैं, लेकिन हम उन्हें छोड़ देंगे। मैथ्यू के मूल श्रोता, मैथ्यू में मसीहाई पर जोर, निश्चित रूप से यहूदियों के लिए अधिक उपयुक्त है, और आप पाते हैं कि गैर-यहूदी चर्च में मसीह लगभग यीशु के उपनाम, यीशु मसीह की तरह बन गया है, न कि उनकी उपाधि, जिसे कोई भी यहूदी पहचान सकता था कि यह मसीहा का ग्रीक अनुवाद है, जिसे आप चाहें तो अभिषिक्त व्यक्ति कह सकते हैं।

मैथ्यू का सुसमाचार यहूदी प्रथाओं के बारे में जानकारी देने के बजाय उन्हें समझाने की ओर प्रवृत्त होता है। उदाहरण के लिए, मार्क उन्हें समझाने की ओर प्रवृत्त होता है, और यह फिर से सुझाव देता है कि उसके मुख्य पाठक यहूदी और यहूदी ईसाई हैं। इसलिए, मैथ्यू 15:2 में, हमारे पास हाथ धोने के बारे में बुजुर्गों की परंपरा है; मार्क ने स्पष्टीकरण के लिए तीन या चार आयतें दी हैं, लेकिन मैथ्यू ने नहीं।

और फिर मैथ्यू 23:5 में, सुसमाचार लेखक कहते हैं, वे अपने तावीज़ों को चौड़ा करते हैं और लटकनों को लंबा करते हैं। यहां तक कि NASB को भी इसे विस्तारित करना आवश्यक लगता है ताकि 20वीं-21वीं सदी के गैर-यहूदी पाठक इसे समझ सकें, और इसलिए वे एक कोष्ठक जोड़ते हैं, लटकनों को लंबा करते हैं, अपने कपड़ों के कोष्ठक और कोष्ठक को हटाते हैं। खैर, अपनी धर्मपरायणता दिखाने के लिए, कुछ फरीसी औसत व्यक्ति की तुलना में बड़ी तावीज़ें और लंबी लटकन पहनते थे।

मुझे याद है कि मैं इसराइल में एक रूढ़िवादी यहूदी से मिला था, और उस व्यक्ति ने अपनी बेल्ट पर लटकते हुए ये लटकनें पहनी हुई थीं, इत्यादि। इसलिए, आज भी कुछ रूढ़िवादी यहूदी मंडलियों में ऐसा ही होता है। मैथ्यू 23-27 में, शास्त्रियों और फरीसियों को सफ़ेदी से पुती हुई कब्रों के समान बताया गया है।

और यहूदी, बेशक, उस भ्रम को पहचानते थे क्योंकि वे कब्रों को सफ़ेदी से रंगते थे ताकि लोग उन्हें गलती से छू न लें और फिर अशुद्ध न हो जाएँ, खासकर किसी त्यौहार से ठीक पहले। अगर वे साल में कभी ऐसा करते तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। इसलिए, वे त्यौहारों से ठीक पहले कब्रों को सफ़ेदी से रंगते थे।

तो, ऐसा लगता है कि मत्ती यहूदियों और यहूदी ईसाइयों के लिए लिख रहा है - मत्ती का उद्देश्य और संरचना। मत्ती अपने सुसमाचार में अपने उद्देश्य के बारे में कोई सीधा बयान नहीं देता है, इसलिए हम सुसमाचार की विषय-वस्तु को देखकर उद्देश्य का अनुमान लगाने की कोशिश कर सकते हैं।

विषय-वस्तु से पता चलता है कि मैथ्यू का उद्देश्य यीशु को मसीहा के रूप में दिखाना है जिसने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया। मैथ्यू ने अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में अधिक भविष्यवाणियों और उनकी व्यापक विविधता का हवाला दिया है। मैथ्यू ने यीशु की सेवकाई और इज़राइल के इतिहास के बीच एक सूक्ष्म समानता भी दर्शाई है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है।

होशे 11:1 की भविष्यवाणी, मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया है, जो होशे में मत्ती के अनुसार इस्राएल पर लागू होती है, और यीशु के साथ भी इसकी समानता है। प्रलोभन के समय यीशु द्वारा शास्त्र का उपयोग, जहाँ वह जंगल में उपवास कर रहा है, और शैतान के प्रति उसकी प्रतिक्रियाएँ सभी इस्राएल और जंगल के अंशों से ली गई हैं। मत्ती जो कर रहा है उसके बारे में कुछ पता लगाने का एक और तरीका संरचना के आंतरिक साक्ष्य की तलाश करना है।

सामान्य तौर पर, जब हम बाइबल लेखकों के साथ काम कर रहे होते हैं, और इस मामले में अन्य लेखकों के साथ भी, हमें यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि लेखक ने अपनी सामग्री की रूपरेखा कैसे तैयार की होगी यदि उसने हमें एक रूपरेखा प्रदान की होती। और इसलिए, हम किसी तरह के मनमाने अनुमान लगाने के बजाय, ऐसा कैसे कर सकते हैं? इससे हमें पुस्तक की संरचना के बारे में अधिक सटीक दृष्टिकोण मिलेगा।

खैर, मैथ्यू में दो संभावित मार्ग हैं जो संक्रमण मार्ग की तरह दिखते हैं। दोनों एक वाक्यांश से शुरू होते हैं। उसके बाद, यीशु ने कुछ और शुरू किया। एक मैथ्यू 4.17 में है। उसके बाद, यीशु ने प्रचार करना शुरू किया।

यदि आप सुसमाचार की विषय-वस्तु को देखें, तो यह यीशु की जनसमूह के प्रति सेवकाई की शुरुआत करता है। इससे पहले, हम वंशावली और जन्म की कहानियों और जंगल में यीशु के प्रलोभन को देख रहे थे, और अब यह जनसमूह के प्रति सेवकाई की शुरुआत करता है। तो, प्रारंभिक कहानियों से यीशु के सुसमाचार की सार्वजनिक घोषणा की ओर संक्रमण।

फिर, आगे, मत्ती 16:21 में, यीशु ने अपने शिष्यों को दिखाना शुरू किया। और यह वह शुरू होता है जिसे आम तौर पर शिष्यों के लिए यीशु की निजी सेवकाई कहा जाता है, और एक तरह से, यह पुस्तक के बाकी हिस्सों की रूपरेखा तैयार करता है। वह अपने शिष्यों को दिखाने जा रहा है कि उसे पीड़ा सहनी है, मारा जाना है, और फिर से जी उठना है।

तो, इन दो संक्रमण अंशों के साथ, हम इस सुसमाचार को तीन भागों में विभाजित करते हैं। प्रारंभिक सामग्री, यीशु द्वारा सुसमाचार की सार्वजनिक घोषणा, और फिर दूसरे भाग में, यदि आप चाहें तो, यीशु द्वारा अपने शिष्यों को दी गई निजी सेवकाई, उनकी पीड़ा और मृत्यु और पुनरुत्थान। मैथ्यू के सुसमाचार में कई प्रवचन हैं, और उनमें से अधिक और ल्यूक और मार्क की तुलना में लंबे हैं।

मार्क, ओलिवेट प्रवचन को छोड़कर, केवल बहुत ही छोटी सामग्री है। आम तौर पर मैथ्यू के सुसमाचार में पाँच प्रवचन देखे जाते हैं। यह बहुत पहले की बात है, मुझे यकीन नहीं है कि कितना पुराना है, लेकिन वैसे भी गोडेट द्वारा नए नियम के परिचय से ही शुरू होता है।

वे सभी एक समान सूत्र के साथ समाप्त होते हैं। यह तब हुआ जब यीशु ने अपना काम समाप्त कर लिया था, या कुछ ऐसा ही, और फिर उस बिंदु पर कथा में वापस चला गया। तो, पर्वत पर उपदेश मैथ्यू 5-7 को लेता है, और पर्वत पर उपदेश के अंत में, हमारे पास यह सूत्र है।

यह तब हुआ जब यीशु ने अपनी बात समाप्त की, और यह निम्नलिखित कथा के साथ आगे बढ़ता है: मैथ्यू के अध्याय 10 में, हमें बारह लोगों को निर्देश मिलते हैं, और 11:1 एक संक्रमण मार्ग बनाता है। अध्याय 13 में, हमें राज्य के दृष्टांत मिलते हैं, और 13:53 एक ऐसा संक्रमण मार्ग बनाता है।

अध्याय 18 में, हमारे पास चर्च अनुशासन सामग्री और उसके शिष्यों को दिए गए प्रवचन हैं, और फिर 19:1 में, हमारे पास एक संक्रमण मार्ग है। अध्याय 24 और 25 में, हमारे पास जैतून का प्रवचन है, और अध्याय 26 में, श्लोक 1 उस पर समापन सूत्र है। कई व्याख्याकारों ने सुझाव दिया कि मैथ्यू ने अपने सुसमाचार को पेंटाटेच के इर्द-गिर्द ढाला, इसलिए हमारे पास पेंटाटेच की पाँच पुस्तकों के बराबर पाँच प्रवचन हैं।

खैर, पर्वत पर उपदेश शायद निर्गमन के लिए काफी उपयुक्त होगा, लेकिन सवाल यह है कि आप उत्पत्ति के साथ क्या करते हैं? और मुझे लगता है कि अन्य इस दिशा में विशेष रूप से प्रभावशाली नहीं हैं। तो, हाँ, पाँच प्रवचन हैं, लेकिन यह तुरंत स्पष्ट नहीं है कि वे वास्तव में क्या कर रहे हैं। कुछ लोग कुछ और समानताएँ भी देखते हैं।

मैथ्यू में वंशावली पीढ़ियों की पुस्तक से मेल खाती है, इसलिए यदि आप प्रवचन के विचार को छोड़ देते हैं, तो आप शायद सुझाव दे सकते हैं कि मैथ्यू का सुसमाचार उत्पत्ति अनुभाग, तैयारी के साथ शुरू होता है, और फिर पर्वत पर उपदेश निर्गमन या कुछ और के रूप में काम कर सकता है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे बहुत अच्छी तरह से ले जा सकते हैं। जंगल के प्रलोभनों को शायद भटकने के रूप में भी देखा जा सकता है, हालाँकि यह तब जाएगा कि उसके बाद सिनाई के गलत पक्ष पर कानून देना अगर आप चाहें, जो भटकने और इस तरह से पहले है। खैर, हम वहाँ भटकना नहीं करेंगे।

मैथ्यू में दो अन्य प्रवचन हैं, हालाँकि, केवल पाँच नहीं, इसलिए यह थोड़ा उलझन में डालता है। मैथ्यू 23 है, फरीसियों पर हाय, या फरीसियों पर हाय, और बेशक, आप 23, 24, 25 कह सकते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि जब आप 25 में जाते हैं तो वहाँ चल रही युगांतशास्त्रीय सामग्री में एक बड़ा बदलाव होता है। फिर, मैथ्यू 3 में भी एक प्रवचन है, लेकिन वह जॉन द बैपटिस्ट का प्रवचन है, इसलिए फिर से, मैं इस बारे में कुछ टिप्पणी कर सकता हूँ कि वह क्या है।

ऐसा लगता है कि मैथ्यू की तकनीक, अगर आप चाहें, तो यीशु के उपदेशों के सामयिक नमूने देना है जो यीशु के व्यक्तित्व से संबंधित हैं, और इन नमूनों को पेंटाटेच में फिट करने का प्रयास करना मुझे थोड़ा ज़्यादा लगता है, लेकिन मैथ्यू काफी बड़े हिस्से का उपयोग करता है, जबकि मार्क बहुत छोटे टुकड़े का उपयोग करता है, और ल्यूक अलग तरह के टुकड़े का उपयोग करता है, अगर आप चाहें तो। मुझे लगता है कि यह काफी स्पष्ट है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि मैथ्यू अपनी सामग्री को कालानुक्रमिक रूप से बदलने और उन्हें कालक्रम के बजाय विषय के अनुसार इकट्ठा करने में शामिल था।

जैसा कि हमने कहा, उनके प्रवचन विषय के अनुसार हैं, और उनके चमत्कार मुख्य रूप से अध्याय 8 और 9 में केंद्रित हैं। इसके अलावा, हम कह सकते हैं कि मैथ्यू के घटनाओं का क्रम

कुछ स्थानों पर मार्क और ल्यूक के क्रम से अलग है। निश्चित रूप से, सभी सुसमाचारों में सार्वजनिक मंत्रालय और फिर निजी मंत्रालय, और फिर विजयी प्रवेश और मृत्यु और पुनरुत्थान और इस तरह की घटनाओं का एक ही क्रम है। लेकिन हमें सुसमाचारों के बीच कालानुक्रमिक स्वतंत्रता का कोई ठोस सबूत नहीं मिलता है; यानी, वही घटनाएँ स्पष्ट रूप से एक अलग क्रम में घटित हुई हैं, हालाँकि जटिलताएँ हैं।

सुसमाचारों को देखने पर यह सवाल उठता है कि क्या दो अलग-अलग सुसमाचारों में देखी गई ये दो घटनाएँ एक ही घटना हैं या फिर ये अलग-अलग घटनाएँ हैं। आपके उदारवादियों ने अक्सर दावा किया है कि मंदिर की वास्तव में केवल एक ही सफ़ाई हुई थी, लेकिन किसी कारण से जॉन या किसी कारण से सिनॉप्टिक्स ने इसे यीशु की सेवकाई के अलग-अलग छोर पर रखा है। बेशक, आपको मछलियों के चमत्कारी पकड़ का भी पता है, जो जॉन में यीशु की सेवकाई के अंत में है, और सिनॉप्टिक्स में यीशु की सेवकाई की शुरुआत में है।

मेरे हिसाब से इनमें से कुछ चीजें ऐसी हैं जो बार-बार दोहराई जाती हैं। कुछ और भी हैं जिनके बारे में हम निश्चित नहीं हैं, लेकिन मैथ्यू में पहाड़ी उपदेश और ल्यूक में मैदान पर उपदेश के बीच बहुत मजबूत समानता है। मेरा अपना झुकाव यह है कि यह संभवतः एक ही उपदेश को संक्षिप्त करने के दो अलग-अलग तरीके हैं, लेकिन मैं गलत हो सकता हूँ क्योंकि यीशु के घुमंतू उपदेशक, अगर आप चाहें, तो हमारे घुमंतू उपदेशकों की तरह अलग-अलग चर्चों में जाने के रूप में नहीं, बल्कि वेस्ली या किसी ऐसे व्यक्ति की तरह जो अलग-अलग जगहों पर खुले में बोलते हैं।

इसलिए, हो सकता है कि उन्होंने अलग-अलग जगहों पर एक जैसी सामग्री का इस्तेमाल किया हो। उस मामले में यह बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं होगा। अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग साहित्यिक प्रक्रियाएँ होती हैं।

पश्चिम में अकादमिक थीसिस के लिए उद्धरणों को एक विशिष्ट सटीकता और शैली का पालन करना पड़ता है, लेकिन समाचार पत्र लेख के लिए आवश्यकताएँ कहीं भी औपचारिक नहीं हैं। इसलिए, यह आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए कि कभी-कभी यीशु के शब्द एक सुसमाचार लेखक की तुलना में दूसरे में कुछ अलग लगते हैं। बेशक, ऐसे संवाद का आविष्कार करना जो कभी हुआ ही नहीं, किसी भी संस्कृति में बुरा माना जाना चाहिए, और मुझे लगता है कि यह सही है।

जब आप किसी लंबे भाषण या लंबी कथा को संक्षिप्त कर रहे होते हैं, तो लेखक किसी प्रवचन से मुख्य वाक्यों का उपयोग कर सकता है, कार्रवाई को सरल बना सकता है, या अपने शब्दों में उसका सारांश दे सकता है। इस तरह के दृष्टिकोण निश्चित रूप से स्वीकार्य होंगे जब तक कि वह हमें बताता है कि वास्तव में क्या हुआ था, और वह हमें यह नहीं बता सकता कि वह क्या कर रहा है। यह केवल कथा को लंबा बनाता है और किसी न किसी तरह से चीजों को जटिल बनाता है।

इस पर मेरा मानना है कि सुसमाचार पूरी तरह से विश्वसनीय हैं। वे हमें बताते हैं कि क्या हुआ, आदि, लेकिन टाइम मशीन के बिना, हम यह पता लगाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं कि सभी विशेष घटनाओं को कैसे सुसंगत बनाया जाए, न ही यह निश्चित रूप से बता सकते हैं कि कोढ़ी

के ये दो उपचार वास्तव में एक ही घटना हैं या दो अलग-अलग अवसर हैं। आगे बढ़ते हुए, हम अभी भी मैथ्यू की विशेषताओं और मैथ्यू में विशिष्ट वाक्यांशों का वर्णन कर रहे हैं।

मैथ्यू में दो वाक्य बहुत आम हैं। उनमें से एक, बेशक, यह है कि यह पूरा हो सकता है। इनमें से कुछ तंतु अन्य सुसमाचारों में भी उल्लेखित हैं, लेकिन मैथ्यू में जितने नहीं।

कुछ उदारवादियों ने सुझाव दिया है कि गवाही की एक पुस्तक, जो मसीहा के बारे में पुराने नियम के प्रमाण ग्रंथों का संकलन है, का उपयोग प्रारंभिक चर्च में किया गया था। खैर, ऐसा हो सकता है, लेकिन यह अधिक संभावना है कि ये यीशु के स्वयं के स्पष्टीकरण पर वापस जाएं। आपको याद होगा कि इम्मांस के रास्ते पर, उसने वहाँ मौजूद दो लोगों को पुराने नियम के अंशों की व्याख्या की, और फिर कुछ घंटों बाद ऊपरी कमरे में, उसने शिष्यों के एक बड़े समूह को उन्हें समझाया।

मेरा सुझाव है कि मैथ्यू जैसी पूर्ति टिप्पणियाँ, और फिर पॉल और पीटर में पुराने नियम के विभिन्न अंशों का हवाला, वास्तव में, यीशु ने उस समय उन्हें जो बताया था उसका प्रतिबिंब है। और, ज़ाहिर है, सभी लोगों में से, वह जानता होगा कि पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ वास्तव में मसीहा और इस तरह की चीज़ों की ओर इशारा करने के लिए बनाई गई थीं। मैथ्यू में दूसरा विशिष्ट वाक्यांश स्वर्ग का राज्य है।

और यह वाक्यांश 30 से ज़्यादा बार आता है। हालाँकि कुछ लोग असहमत हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह वाक्यांश परमेश्वर के राज्य का पर्याय है। हम पाते हैं कि मार्क और ल्यूक के पास कभी स्वर्ग का राज्य नहीं था, और मैथ्यू के पास लगभग हमेशा स्वर्ग का राज्य था, लेकिन कभी-कभी परमेश्वर का राज्य भी था, आदि।

मैथ्यू के स्वर्ग के राज्य का प्रयोग मार्क और ल्यूक के परमेश्वर के राज्य के समान ही संदर्भ में किया जाता है। और मैथ्यू के पास वास्तव में एक ऐसा अंश है जहाँ वह दोनों शब्दों का समानांतर प्रयोग करता है। वह है मैथ्यू 19, श्लोक 23 और 24।

रब्बी साहित्य के कुछ अंशों को जानने से इस पर कुछ प्रकाश पड़ता है। रब्बी स्रोतों में, हम पाते हैं कि रब्बी परमेश्वर के राज्य शब्द का उपयोग करने में अनिच्छुक थे। और इसलिए, वे अक्सर इसके लिए प्रतिस्थापन शब्द का उपयोग करते थे।

और उन प्रतिस्थापनों में से एक स्वर्ग था। उनमें से एक महिमा थी। उनमें से एक स्थान था।

और इस तरह की कई अन्य बातें। और इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू, एक धर्मनिष्ठ यहूदी के रूप में, अधिकांश समय परमेश्वर के राज्य के बजाय स्वर्ग के राज्य का उपयोग कर रहा है। मैथ्यू में कुछ अन्य सामग्रियाँ मैथ्यू के लिए अद्वितीय हैं और इसलिए, उस अर्थ में विशिष्ट हैं।

हमने पहले ही उल्लेख किया है कि मैथ्यू विभिन्न यहूदी रीति-रिवाजों और प्रथाओं का उल्लेख करता है जो शायद गैर-यहूदियों के लिए विशेष रूप से दिलचस्प नहीं होंगे। मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास जन्म सामग्री है, लेकिन इसमें से कुछ मैथ्यू के लिए विशिष्ट है, और कुछ ल्यूक के लिए

विशिष्ट है। दोनों कुंवारी जन्म पर स्पष्ट हैं, लेकिन अन्यथा, वे बहुत अधिक ओवरलैप नहीं करते हैं।

मैथ्यू ने बुद्धिमान लोगों के आने, हेरोदेस द्वारा यीशु को मारने की कोशिश, मिस्र की ओर पलायन आदि का उल्लेख किया है। लूका ने इनका बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया है। मुझे ऐसा लगता है कि मैथ्यू हमें यूसुफ का दृष्टिकोण देता है, और लूका हमें मरियम का दृष्टिकोण देता है।

मैथ्यू में, हम यूसुफ को सोचते, चिंता करते और कार्य करते हुए देखते हैं जबकि ल्यूक कहता है कि मरियम ने अपने दिल में इन बातों पर विचार किया, आदि। और यह मरियम ही है जो अपनी चचेरी बहन एलिजाबेथ और ऐसी ही अन्य से मिलने जाती है। तो, यह दो जन्म कथाओं के बीच अंतर के बारे में मेरा दृष्टिकोण है।

दिलचस्प बात यह है कि अगर आप चाहें तो सुसमाचार के सबसे ज़्यादा यहूदी लोगों के लिए मैथ्यू में चर्च के बारे में कुछ दिलचस्प सामग्री है और वास्तव में ल्यूक या मार्क या जॉन में चर्च के बारे में कुछ भी तुलनीय नहीं है। जॉन 16 में चर्च में पीटर, मैथ्यू 16 में चर्च अनुशासन और मैथ्यू 18 में चर्च अनुशासन है। खैर, आइए देखें।

मैं सुझाव दूंगा कि यह उस तरह के डिस्पेंसेशनलिज्म के लिए किसी तरह की समस्या को जन्म देता है जो चर्च और इज़राइल के बीच इतना पूर्ण अंतर करता है और जो मैथ्यू को यहूदी सुसमाचार के रूप में देखता है, इस अर्थ में कि यह इस डिस्पेंसेशन के लिए नहीं है, जो कि पुराने या क्लासिक डिस्पेंसेशनलिज्म की विशेषता है, न कि जिसे हम आज प्रगतिशील डिस्पेंसेशनलिज्म कहते हैं। एक्लेसिया, इस चट्टान पर, मैं मैथ्यू 16 में अपना चर्च बनाऊंगा। एक्लेसिया एक सेप्टुआजेंट शब्द है।

यह एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग मण्डली के लिए किया जाता है, और इसलिए यह अक्सर हिब्रू मण्डली से बुलावे का अनुवाद होता है। लेकिन बेशक, यीशु यहाँ मेरे इक्लेसिया के बारे में बात कर रहे हैं। तो, क्या इसे पुराने नियम के इक्लेसिया से अलग किया जाना चाहिए? स्पष्ट नहीं किया गया।

फिर मैथ्यू 28 में महान आदेश है। मार्क में भी एक आदेश दिखाई देता है, हालाँकि वह कुछ हद तक संदिग्ध पाठ में है, लेकिन ल्यूक, प्रेरितों के काम और यूहन्ना में भी कुछ ऐसा ही है। एक दूसरे से अलग संदर्भ में, यीशु ने सुसमाचार के प्रसार को कई अवसरों पर निर्देशों को दोहराने के लिए पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण माना।

उदारवादी लोग सभी राष्ट्रों में जाने और इस तरह के निहितार्थ को पसंद नहीं करते हैं और यह कि यीशु युगों तक शिष्यों के साथ रहेंगे और त्रित्व सूत्र, इस मामले के लिए। इसलिए, वे इस बात से इनकार करते हैं कि यह यीशु से जुड़ा है। हालाँकि, यह काफी दिलचस्प है कि मैथ्यू के सुसमाचार के साथ-साथ पवित्रशास्त्र में कई अन्य स्थानों पर सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रसार की भविष्यवाणी की गई है, लेकिन बाइबल का पूरा भाग सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रसार से बहुत पहले लिखा गया था।

तो, वैसे भी वहाँ किसी तरह की पूर्ति हो रही है। वे तिथि के मामले में मैथ्यू की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं क्योंकि मैथ्यू के खाते में जाने के आदेश के साथ कथित विरोधाभास है, जबकि प्रेरितों के काम में जाने के लिए शुरुआती अनिच्छा है। और त्रिदेव, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा, बनाम मसीह के नाम पर शुरुआती बपतिस्मा, आदि।

शायद ये दोनों ही अनुच्छेदों को जरूरत से ज्यादा पढ़ रहे हैं, ताकि यह संकेत मिल सके कि आप बपतिस्मा समारोह में इस्तेमाल होने वाले सटीक सूत्र या किसी चीज को समझ रहे हैं। अगर ईसाई धर्म सच है, तो इनमें से कोई भी बात गंभीर नहीं है। अगर यीशु वही हैं, जो बाइबल दावा करती है, तो उनका आना और पुनरुत्थान निश्चित रूप से धरती हिला देने वाली अहमियत की खबर है।

भजन 22 में भी यही कहा गया है, और यह निश्चित रूप से ईसाई धर्म के उदय से पहले लिखा गया था। यदि यीशु परमेश्वर है और केवल एक ही परमेश्वर है, तो वह हर जगह मौजूद है और उसका नाम पिता के साथ साझा है। मुझे लगता है कि प्रेरितों के काम की समस्याएँ मुख्य रूप से जोर देने से संबंधित हैं।

प्रारंभिक शिष्य स्पष्ट रूप से इस बारे में आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा कर रहे थे कि इसे कैसे किया जाए और पहले उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि गैर-यहूदी यहूदी धर्म में परिवर्तित हुए बिना गैर-यहूदी के रूप में ईसाई बन जाएंगे। हमने संभवतः मैथ्यू और प्रेरितों के काम दोनों को गलत तरीके से पढ़ा है, क्योंकि हमने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर और यीशु मसीह के नाम पर वाक्यांशों को समारोह में इस्तेमाल किए जाने वाले सटीक शब्दों के निर्देश के रूप में लिया है। ठीक है, मैं यहाँ मैथ्यू की एक रूपरेखा देता हूँ, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह पढ़ने में बहुत अच्छी तरह से आता है।

मैं आपको बिना किसी संख्या के इसका संक्षिप्त विवरण देता हूँ। मैथ्यू वंशावली से शुरू होता है जो अध्याय 1 के अधिकांश भाग तक चलती है, फिर जन्म और शिशु अवस्था जो हमें अध्याय 2 के अंत तक ले जाती है, फिर सेवकाई की तैयारी, जो हमें अध्याय 3 के सभी और अध्याय 4 के भाग तक ले जाती है, और फिर गैलीलियन सेवकाई अध्याय 4 के मध्य से अध्याय 18 के अंत तक चलती है, और इसे सार्वजनिक सेवकाई, अध्याय 4 के मध्य से अध्याय 13 के आरंभ तक, और फिर लगभग 3 अध्यायों के लिए सीमित सेवकाई, और फिर लगभग 3 अध्यायों के लिए निजी सेवकाई में विभाजित किया जा सकता है। इसके बाद यरूशलेम की यात्रा होती है, जो लगभग 2 अध्यायों, 19-1 से 21-1 तक होती है।

फिर, आखिरी सप्ताह, और यह लगभग 5 अध्याय है, और फिर विश्वासघात, परीक्षण, और सूली पर चढ़ना 2 अध्याय लेता है, और फिर पुनरुत्थान के बाद के दर्शन 1 अध्याय लेते हैं। तो, मूल रूप से, मैथ्यू में सिर्फ गैलीलियन मंत्रालय है। हम मार्क के साथ कुछ ऐसा ही देखेंगे, जबकि ल्यूक में पारियन मंत्रालय है, और जॉन में यहूदिया मंत्रालय के बारे में भी काफी कुछ है।

यहाँ पहले से ही, पुनरुत्थान के माध्यम से अंतिम सप्ताह 28-अध्याय वाली पुस्तक के 8 अध्यायों को लेता है, इसलिए यदि आप चाहें तो यीशु की सांसारिक सेवकाई के अंत पर एक बड़ा, बड़ा

खंड। ठीक है, हम मार्क की विशेषताओं पर आगे बढ़ने जा रहे हैं, और जैसा कि हमने मैथ्यू के साथ किया था, हम जॉन मार्क नामक व्यक्ति से शुरू करेंगे। मार्क का उल्लेख वास्तव में नए नियम में 10 या 11 बार किया गया है, इसलिए वास्तव में मैथ्यू से अधिक, भले ही मैथ्यू एक प्रेरित है और मार्क नहीं है।

हालाँकि, मार्क का उल्लेख प्रेरितों के काम में 6 बार किया गया है, इसलिए हमें उनकी अधिकांश सामग्री यहीं से मिलती है, और फिर पॉलिन एपिस्टल्स में 3 बार, कुलुस्सियों, फिलेमोन और 2 तीमुथियुस में एक-एक बार। 1 पतरस में एक बार, मार्क, मेरा बेटा, आदि पीटर कहते हैं, और फिर शायद मार्क 14, 51, 52 में, गिरफ्तारी की घटना में चादर खोने का उल्लेख है, इसलिए 10 या 11 बार।

यह सामग्री हमें उनके जीवन का पता लगाने के लिए पर्याप्त है। कुलुस्सियों 4.10 हमें बताता है कि मार्क बरनबास का चचेरा भाई था। मुझे लगता है कि KJV में भतीजा है। यह शब्द वास्तव में भतीजे, ओनेप्सियोस का समानार्थी है, लेकिन अब इसे आम तौर पर थोड़ा अधिक सामान्य शब्द के रूप में समझा जाता है, इसलिए चचेरा भाई, जो आपको बहुत कुछ नहीं बताता है क्योंकि पहले और दूसरे और तीसरे चचेरे भाई और हटाने वाले और उस तरह की सभी चीजें हैं, जिन्हें हम कम से कम अंग्रेजी वंशावली शब्दावली में कहते हैं।

मार्क की माँ मरियम थी, और हमें प्रेरितों के काम 12:12 में बताया गया है कि उसके पास यरूशलेम में एक घर था। उसके पिता का उल्लेख नहीं है। शायद वह पहले ही मर चुका था।

शायद वह आस्तिक नहीं था। हमें नहीं पता। हो सकता है कि मार्क यीशु की गिरफ्तारी के समय मौजूद रहा हो।

यह मार्क 14:51-52 है। इसे अटकलबाजी कहा जाता है। एक संभावित कहानी बताती है कि यह कैसे काम करेगा, यह सुझाव दिया गया है कि अंतिम भोज मैरी के घर पर आयोजित किया जाएगा।

हम यह तो नहीं जानते, लेकिन हम यह जरूर जानते हैं कि मरियम के पास एक घर था और बाद में भी विश्वासियों ने इसका इस्तेमाल किया। अंतिम भोज मरियम के घर पर ही हुआ था। भीड़ यीशु को गिरफ्तार करने के लिए घर पर आती है।

आखिरकार, यहूदा से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह ठीक से जान सके कि यीशु उस समय कहाँ जा रहा था, लेकिन वह शायद विभिन्न स्थानों पर कोशिश करेगा। मार्क जाग जाता है। घर पर आने वाली भीड़ के ऐसा करने की संभावना है।

गेथसेमेन तक अपनी चादर ओढ़े हुए भीड़ का पीछा करता है, झाड़ियों से गिरफ्तारी को देखता है, और लगभग खुद भी पकड़ा जाता है। अटकलें, ठीक है, लेकिन एक छोटी सी तस्वीर। मार्क यरूशलेम में रह रहा था, प्रेरितों के काम 12:12, अपनी माँ के साथ उस उत्पीड़न के दौरान जिसमें ज़ेबेदी के बेटे याकूब को मार दिया गया था और पतरस को कैद कर लिया गया था।

हम सोचते हैं कि यह घटना 144 ई. के आसपास या उससे कुछ पहले हुई थी, जो जोसेफस में हेरोद अग्रिप्पा I की मृत्यु के समय के बारे में हमारे पास मौजूद जानकारी के आधार पर है, जो वहाँ शामिल व्यक्ति था। फिर, बरनबास और पॉल मार्क को अपने साथ अन्ताकिया ले जाते हैं, प्रेरितों के काम 12-25। फिर मार्क पॉल और बरनबास के साथ पहली मिशनरी यात्रा पर जाता है, प्रेरितों के काम 13:5, उनके सहायक के रूप में, एक हुपेरिटस, जिसका मूल रूप से एक ट्राइरेम या उस तरह के किसी अंडर-रोवर का मतलब था, लेकिन इस बिंदु तक सहायक के लिए एक सामान्य शब्द बन गया है।

चूँकि मार्क को शायद दुनिया में बहुत कम प्रशिक्षण मिला था, निश्चित रूप से पॉल या बरनबास की तुलना में, उसने संभवतः आवास और भोजन और इस तरह की चीजों की देखभाल जैसे काम किए होंगे। हालाँकि, जब वे साइप्रस से एशिया माइनर में जाते हैं, तो मार्क उन्हें छोड़ देता है। शायद मार्क पहले भी साइप्रस गया था क्योंकि बरनबास उसका चचेरा भाई था या कुछ और और वह नए इलाके में नहीं जाना चाहता था या कुछ और।

प्रेरितों के काम 13:13 देखें। इसकी अनुमानित तिथि संभवतः 47-48 ई. है। कारण जो भी रहा हो, पौलुस को यह उचित कारण नहीं लगा।

इस बात पर कुछ संभावनाएँ बताई गई हैं कि मार्क ने उन्हें क्यों छोड़ा होगा। एक संभावना यह हो सकती है कि ऐसा लगता है कि बरनबास से पॉल के नेतृत्व में बदलाव हो सकता है। इस पहली मिशनरी यात्रा की कहानी के शुरुआती हिस्से में, बरनबास को पॉल से आगे सूचीबद्ध किया गया है, लेकिन फिर साइप्रस की घटना के बाद जहाँ सर्जियस पॉलस का धर्म परिवर्तन होता है और जादूगर एलीमस को पॉल, ईश्वर द्वारा अंधा कर दिया जाता है, जाहिर है।

उसके बाद, पॉल का ज़िक्र सबसे पहले किया गया। यह संभव है कि मार्क इस बात से चिढ़ गया हो। हमें नहीं पता।

मैं यहाँ अनुमान लगा रहा था। पुनर्निर्माण, अगर आप चाहें। दूसरी बात, एशिया माइनर में जाने की संभावना एक बदली हुई योजना थी, और मार्क इतने लंबे समय तक नहीं जाना चाहता था।

तीसरा, मार्क ने गैर-यहूदियों के आक्रामक सुसमाचार प्रचार का विरोध किया, जो तब शुरू होने वाला था। या वह खतरे से डर गया, निराश हो गया, या घर की याद आने लगी। तो, ये सभी संभावनाएँ हैं, और फिर से हम अटकलें लगा रहे हैं।

याद रखें, कोई टाइम मशीन नहीं थी। यरूशलेम परिषद के बाद, पौलुस और बरनबास ने अपने द्वारा स्थापित चर्चों का दौरा करने के लिए दूसरी मिशनरी यात्रा की योजना बनाई। आप इसे प्रेरितों के काम 15 के उत्तरार्ध में हमारे लिए वर्णित देख सकते हैं।

बरनबास मार्क को दूसरा मौका देना चाहता है, लेकिन पॉल ऐसा नहीं चाहता। इसलिए, वे अलग हो गए, और मार्क और बरनबास साइप्रस चले गए, और पॉल और सीलास एशिया माइनर के लिए परिपक्व ईसाई प्रमुख बन गए। और यह लगभग 50 ई. की बात है।

खैर, हम बाद में पत्रों में मार्क के बारे में कुछ नहीं सुनते क्योंकि जैसा कि आपको याद होगा, प्रेरितों के काम मुख्य रूप से पॉल का अनुसरण करते हैं। लगभग 10 साल बाद, लगभग 61-63 ई. में, मार्क पॉल के अनुग्रह में वापस आ गया। हम इसे कुलुस्सियों 4, 10 और अंत में 24 में देखते हैं।

जाहिर है कि मार्क को पॉल द्वारा एक मिशन पर भेजा जा रहा है और उसे कुलुस्सियन चर्च में भेजा गया है। वह अब पॉल के साथ एक सहकर्मी है। फिर भी बाद में, मार्क इफिसुस के पास है और पॉल के लिए उपयोगी होने के लिए उसकी सराहना की जाती है।

2 तीमुथियुस 4:11 में 64-68 ई. की अवधि के दौरान उल्लेख किया गया है। और जब वह इफिसुस से आएगा तो तीमुथियुस को उसे साथ लाना होगा। 1 पतरस 5:13 में, यह पतरस है, जो 2 तीमुथियुस के संदर्भ से पहले का हो सकता है; हम नहीं जानते।

पीटर अभी भी जीवित है, लेकिन मुझे लगता है कि रोमन उत्पीड़न स्पष्ट रूप से शुरू हो चुका है, इसलिए हम सुझाव देंगे कि यह शायद 64 साल बाद हुआ होगा। और मुझे ऐसा लगता है कि पीटर एशियाई कलीसियाओं को इस उत्पीड़न के बारे में चेतावनी दे रहा है, शायद पॉल के कलीसियाओं को भी इसके बारे में चेतावनी दे रहा है, जो यह संकेत दे सकता है कि शायद पॉल स्पेन में है या ऐसा ही कुछ। मार्क बेबीलोन में पीटर के साथ है और अपना अभिवादन भेजता है।

पीटर उसे मेरा बेटा कहता है, संभवतः आध्यात्मिक अर्थ में। हमें इस बात का कोई संकेत नहीं है कि पीटर मार्क का पिता है और मैरी पीटर की पत्नी है या कुछ और। मुझे लगता है कि कोई इस तरह का कुछ बना सकता है।

बेबीलोन कहाँ है? यह बेबीलोन कहाँ है? खैर, इस बात की वास्तविक संभावना है कि मेसोपोटामिया के उस क्षेत्र में जहाँ बेबीलोन शहर था, वहाँ अभी भी एक बड़ा यहूदी समुदाय था, इसलिए हमारे पास वहाँ के साहित्य के पूर्वी रब्बीनिक संग्रह के नाम के रूप में बेबीलोन तल्मूड है। आधुनिक काहिरा के पास मिस्र में एक जगह है जिसे बेबीलोन कहा जाता था। मुझे नहीं पता कि इसे यह नाम कैसे मिला, लेकिन इसमें भी एक बड़ा यहूदी समुदाय था।

तीसरी संभावना रोम है। इसे निश्चित रूप से रहस्योद्घाटन में बेबीलोन कहा गया है। खैर, शायद यह निश्चित रूप से कहने के लिए बहुत मजबूत है, लेकिन मुझे लगता है कि यह टिप्पणीकारों का सामान्य पढ़ना है, और यह हो सकता है कि पीटर पत्र को रोके जाने की स्थिति में अधिकारियों को चकमा देने के लिए एक कोड का उपयोग कर रहा हो। इस तरह की बात सरकारों से निपटने के इतिहास में उन समूहों द्वारा अनसुनी नहीं है जो किसी न किसी कारण से उनके द्वारा दुर्व्यवहार किए जा रहे हैं। परंपरा कहती है कि मार्क बाद में मिस्र में अलेक्जेंड्रिया गए और वहाँ चर्च के नेता बन गए।

तो फिर मार्क के बारे में इतना ही। हम मैथ्यू के बारे में जितना जानते हैं, उससे कहीं ज़्यादा उसके बारे में जानते हैं, कम से कम धर्मशास्त्रीय सामग्री से। मार्क के श्रोताओं के बारे में क्या? बहुत स्पष्ट रूप से, उसके श्रोता गैर-यहूदी और संभवतः रोमन हैं।

अरामी वाक्यांश, जिनमें से मार्क में बहुत सारे हैं, आम तौर पर अनुवादित हैं; इस प्रकार, पाठकों से अरामी भाषा जानने की अपेक्षा नहीं की जाती थी। यहूदी प्रथाओं को समझाया गया है। उदाहरण के लिए, हाथों की सफाई के बारे में बताया गया है। किसी भी यहूदी के लिए, ऐसा कुछ अनावश्यक होगा।

इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि मार्क गैर-यहूदी श्रोताओं को लिख रहा है जो फिलिस्तीन की भाषाओं और संस्कृति से अपरिचित हैं। लोग स्पष्ट रूप से गैर-यहूदी हैं। परंपरा और शायद लैटिनवाद से हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि ये गैर-यहूदी रोमन थे।

मैं इसे मजबूत तो नहीं मानूंगा लेकिन निश्चित रूप से एक संभावना है। कई लैटिनिज्म हैं जो लैटिन शब्दों का उपयोग करते हैं लेकिन यदि आप चाहें तो ग्रीक वर्णमाला में डाल सकते हैं जो मार्क के सुसमाचार में पाए जाते हैं। मार्क 15:15 में एक पेर्गोला है, जिसका अर्थ है कोड़ा मारना या फ्लैगेलेट के साथ ऐसा करना, जो वास्तव में क्रिया है जिसे लैटिन फ्लैगेल्ला से अंग्रेजी में उधार लिया गया है।

यह शब्द, हालांकि, जॉन 2 और मैथ्यू 11 में दो अन्य सुसमाचारों में भी दिखाई देता है, इसलिए यह केवल यह दिखा सकता है कि चूंकि रोमन 63 ईसा पूर्व से इजरायल में प्रमुख थे, इसलिए उनके कुछ शब्द वहां आ गए थे। आप निश्चित रूप से पा सकते हैं कि इस तरह की बात 50 या 100 वर्षों तक कब्जा करने वाली सेना के साथ होती है, और यदि आप चाहें तो स्थानीय भाषा में कई शब्द आम हो जाते हैं। एक जो थोड़ा अधिक विशिष्ट है वह है सेंचुरियन, जो लैटिन सेंचुरियन से मार्क 15 में तीन बार आता है, और यह हमें आश्चर्यजनक नहीं लगता क्योंकि हमने इसे अंग्रेजी में भी उधार लिया है, लेकिन मैथ्यू, ल्यूक और अधिनियमों में ग्रीक समकक्ष हेक्टोन का उपयोग किया गया है। आर्केस नेता या १०० से अधिक शासक तो आप कह सकते हैं कि यह सेना में अधिकारी के उस स्तर के लिए ग्रीक शब्द है।

खैर, मुझे संदेह है कि जब श्रोताओं का अनुमान लगाने की बात आती है तो हमें इस तरह के कुछ लैटिनवादों पर बहुत अधिक भार डालना चाहिए। मार्क का उद्देश्य, सुसमाचार में कोई प्रत्यक्ष कथन नहीं दिया गया है। मैथ्यू की तुलना में मार्क से उद्देश्य का अनुमान लगाना अधिक कठिन है। लेखक यह नहीं कहता है कि वह पीटर की परंपराओं को संरक्षित करने का इरादा रखता है, उदाहरण के लिए, या वह रोमियों या अन्यजातियों को सुसमाचार प्रस्तुत करने का इरादा रखता है।

बेशक, शुरूआती पंक्ति में मार्क 1:1 का उद्देश्य, ईश्वर के पुत्र, ईसा मसीह के सुसमाचार की शुरूआत, बहुत अच्छी तरह से बताया जा सकता है। बेशक, यह चारों सुसमाचारों में साझा की गई बात है, इसलिए यह वह नहीं होगा जिसे हम एक विशिष्ट उद्देश्य कहेंगे, लेकिन स्पष्ट रूप से, यह इस अर्थ में मार्क का उद्देश्य है कि यह यीशु के बारे में अच्छी खबर है, जो मसीहा है और जो ईश्वर का पुत्र है। खैर, शायद मार्क, जैसा कि कुछ टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है, विशेष रूप से यूनानियों की तुलना में रोमन मानसिकता पर लक्षित है, और आप, निश्चित रूप से, उनकी तुलना इब्रानियों और सीरियाई और मिस्रियों और उस तरह की चीजों से कर सकते हैं।

रोमन लोग व्यावहारिक, क्रियाशील, संगठित आदि होते थे। और, बेशक, पीटर खुद भी एक व्यावहारिक स्वभाव के थे, इसलिए वे शायद इस मामले में रोमनों के साथ अच्छी तरह से फिट बैठते थे, और यही वह समय था जब हम मार्क के बारे में अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट से छोटी सी बात पढ़ते हैं, जो इस तरह की दिशा में जाती है कि रोम के लोग पीटर की बातें सुनकर उत्साहित थे और वे चाहते थे कि मार्क इसे लिखे, इसलिए शायद यही हमें यहाँ मिला है। इस प्रकार, रोमनों के बीच उनकी सामग्री की उच्च मांग रही होगी, जैसा कि क्लेमेंट से हमारी परंपरा कहती है।

खैर, मार्क की विशेषताएँ। हमने इनका उल्लेख पहले भी किया था जब हम लेखकत्व और तिथि पर चर्चा कर रहे थे। मार्क में एक जीवंतता है।

मार्क में ग्राफिक और सुरम्य विवरण भरे पड़े हैं, जो एक्शन के लिए ज़रूरी नहीं हैं, लेकिन कथा में कुछ रंग और गहराई जोड़ते हैं। 5,000 लोग हरी घास पर लेटे हुए हैं। वैसे, यह इंग्लैंड या पूर्वी अमेरिका या उस तरह की किसी चीज़ जैसा नहीं लगेगा, लेकिन दुनिया के उस हिस्से में घास सिर्फ़ साल के दौरान ही हरी होती है।

तो, यह वास्तव में आपको कुछ बताने जैसा है। मार्क ने यीशु की भावना को नोट किया है। हमें लगता है कि वह कथा में जान डालने के लिए अक्सर ऐतिहासिक वर्तमान का उपयोग करता है।

कम से कम यह एक आम सुझाव रहा है कि ग्रीक में ऐतिहासिक वर्तमान क्या करता है। मार्क में बहुत सारे विवरण हैं। मार्क मैथ्यू, ल्यूक या जॉन से छोटा है, लेकिन वह अक्सर मैथ्यू या ल्यूक की तुलना में अधिक विस्तार से घटनाओं की रिपोर्ट करता है।

वह कभी-कभी शामिल लोगों के नाम, दिन का समय और आसपास की भीड़ का उल्लेख करता है, और ये चीज़ें अक्सर अन्य सुसमाचारों में नहीं मिलती हैं। फिर भी, जैसा कि मैंने कहा, मार्क सबसे छोटा सुसमाचार है। यह संक्षिप्तता लंबे प्रवचनों को छोड़कर और कम घटनाओं की रिपोर्ट करके प्राप्त की जाती है।

क्रियाकलाप। मरकुस की एक और विशेषता सुसमाचार में क्रियाकलाप है। यीशु की सेवकाई में क्रियाकलाप पर ज़ोर दिया गया है।

ग्रीक शब्द यूथस का अक्सर इसी तरह अनुवाद किया जाता है। इसका इस्तेमाल 40 से ज़्यादा बार किया गया है और यह मार्क के कथन को एक तरह से जल्दबाजी और बेदमपन वाला बना देता है। मार्क यीशु के शब्दों से ज़्यादा यीशु के कामों पर ज़ोर देता है।

मार्क आमतौर पर यीशु के बारे में लंबे प्रवचन नहीं देते हैं। जैसा कि मैंने पहले बताया, मार्क 13, ग्यारहवाँ प्रवचन, मार्क के इतिहास का सबसे लंबा भाषण है। मार्क चमत्कारों से भरा हुआ है।

अठारह रिकॉर्ड किए गए हैं, हालांकि केवल दो मार्क के लिए अद्वितीय हैं। तो यह विशेषता है, फिर। जीवंतता, विस्तार, गतिविधि।

अरामी। कई अरामी शब्द दर्ज हैं और आम तौर पर उनका अनुवाद ग्रीक में किया जाता है। इनमें से कुछ अरामी शब्द सिर्फ़ मार्क के लिए हैं।

बोअनेर्गेस, वह एफ जो यीशु ने ज़ेबेदी के दो बेटों को दिया था, का अर्थ है वज्र के बेटे। तलिताह कुम, मरकुस 5:41, यार्स की बेटी को आदेश, एक छोटी लड़की, उठो। इफ़था, 7:34, मृत्यु मूक को आदेश, खुल जाओ।

बार्तिमाईस को अंधा आदमी कहा गया है, जिसका मतलब है तिमाईस का बेटा। मार्क ने अरामी नाम बार्तिमाईस का अनुवाद भी किया है, जो बताता है कि दर्शकों को अरामी भाषा से कोई लगाव नहीं है। अब्बा, 14.36, यीशु भगवान को संबोधित करते हैं, जिसका मतलब है पिता।

इसका उपयोग रोमियों और गलातियों में पॉल द्वारा किया गया है, लेकिन अन्य सुसमाचारों में नहीं। मार्क में कुछ अरामी शब्द भी हैं जो अन्य सुसमाचारों में भी पाए जाते हैं। कोरबन, 7:11, मंदिर को उपहार, जिसे मार्क में समझाया गया है, लेकिन मैथ्यू, 27:6 में इसका अनुवाद नहीं किया गया है। गोलगोथा, 15:22, खोपड़ी का स्थान।

मत्ती और यूहन्ना दोनों ने इसका इस्तेमाल किया और तीनों ने इसका अनुवाद किया। एलोई, एलोई, लामा सुबाचथानी, 15:34, मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर। मत्ती ने इसका इस्तेमाल किया और इसका अनुवाद भी किया, जैसा कि मार्क ने किया।

रब्बी रब्बोनी ने मार्क में चार बार, मैथ्यू में चार बार और जॉन में नौ बार कई बार इसका इस्तेमाल किया, लेकिन केवल एक बार अनुवाद किया, और वह भी जॉन द्वारा। मार्क ने संभवतः स्पष्टता के लिए अरामी भाषा का इस्तेमाल किया, लेकिन यह फिर से हो सकता है, जैसा कि परंपरा से पता चलता है, पीटर ने यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों को याद किया या ऐसा ही कुछ। ये उद्धरण हमें यह नहीं बताते कि यीशु केवल अरामी भाषा में बोलते थे।

एक सीरोफोनीशियन महिला और पिलातुस के साथ उनकी बातचीत से पता चलता है कि उन्हें यूनानी भाषा का ज्ञान था। खैर, अब मैं मार्क की एक रूपरेखा दूंगा, और मैं आपको फिर से उस पर चलता हूँ। हम अध्यायों के हिसाब से मैथ्यू की तुलना में काफी छोटे सुसमाचार को देख रहे हैं।

मत्ती में 28 अध्याय हैं, जबकि मरकुस में केवल 16 हैं। मरकुस में सेवकाई की तैयारी केवल अध्याय एक में ही होती है। फिर, गैलीलियन सेवकाई अध्याय एक के मध्य से शुरू होती है और अध्याय नौ के अंत तक चलती है। इसे स्पष्ट रूप से सार्वजनिक, सीमित, निजी या इस तरह के किसी भाग में विभाजित नहीं किया गया है।

फिर आपके पास यरूशलेम की यात्रा है, जो एक अध्याय, अध्याय 10 में है। अंतिम सप्ताह में तीन अध्याय और लगभग 10 छंद हैं, 11:1, 14:10। फिर आपके पास विश्वासघात, परीक्षण और क्रूस पर चढ़ने के बारे में दो अध्याय हैं, दो अध्यायों से कम, और पुनरुत्थान, एक अध्याय, और निश्चित रूप से, मार्क के अंतिम 12 छंदों के प्रश्न के साथ, पुनरुत्थान के बाद की सामग्री के लिए केवल आठ छंद हैं।

तो यह है मार्क का सुसमाचार। अब लूका के साथ भी यही करने की कोशिश करें। लूका की विशेषताएँ।

ल्यूक, चिकित्सक। नए नियम में ल्यूक का नाम केवल तीन बार उल्लेख किया गया है। कुलुस्सियों 4:14, फिलेमोन 24, और 2 तीमुथियुस 4:11। इसलिए, तीन लोगों, मत्ती, मरकुस और ल्यूक में से ल्यूक का नाम बहुत कम बार उल्लेख किया गया है।

हालाँकि, इन विरल संदर्भों से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि लूका एक चिकित्सक था और पॉल उससे प्यार करता था, कुलुस्सियों 4:14। वह रोम में अंत तक भी पॉल का एक वफादार साथी था। 2 तीमुथियुस 4:11 रोम में अंत तक चलता है। और वह स्पष्ट रूप से यहूदी के बजाय गैर-यहूदी था।

मेरे पास कुछ उत्साही लोग हैं जो कहते हैं कि पूरा नया नियम यहूदियों से बना है, लेकिन इस बात के सबूत वाकई काफी मजबूत हैं कि लूका एक गैर-यहूदी है। वह सबूत क्या है? खैर, यह अप्रत्यक्ष है, लेकिन कुलुस्सियों 4:10-14 में अभिवादन की एक श्रृंखला है जो पॉल अपने दोस्तों की ओर से भेज रहा है जब वह कुलुस्से में है। और पॉल ने उन्हें दो समूहों में विभाजित किया है।

वह बीच में कहता है, ये सभी खतना वाले लोग हैं जो मेरे साथ हैं। और फिर वह दूसरे समूह की ओर जाता है। यह स्पष्ट है कि उसके आगे के लोग यहूदी हैं।

उनमें से कम से कम एक दो तो स्पष्ट हैं। वह पूरे समूह के लिए ऐसा कहता है। ल्यूक दूसरे समूह में है।

अगर आप चाहें तो वह खतनारहित समूह में है। इनके अलावा, हमारे पास ल्यूक के नाम से सिर्फ़ तीन संदर्भ हैं, और हमारे पास प्रेरितों के काम में छोटे अंश हैं। ये वे स्थान हैं जहाँ प्रेरितों के काम का लेखक संकेत देता है कि वह उस विशेष बिंदु पर वर्णन में अन्य लोगों के साथ मौजूद है।

इन मामलों में लेखक, प्रथम-पुरुष बहुवचन में लिखता है, जिसमें वह खुद को भी शामिल करता है। पाठ्य रूप से इसकी तीन निश्चित घटनाएँ हैं। प्रेरितों के काम 16:10-17 पॉल की मिशनरी यात्रा।

पौलुस को मकिदुनिया जाने का दर्शन मिलने के बाद, हम, माना, आदि, हम, आदि वहाँ से शुरू होते हैं और इसी प्रकार पहले आठ परिच्छेदों से होते हुए आगे बढ़ते हैं।

इस समूह में पॉल, सीलास, तीमुथियुस और लेखक शामिल हैं। हम का प्रयोग पद 10 से शुरू होता है और पद 17 में समाप्त होता है, और यह भौगोलिक है। वे तब कुछ यात्रा कर रहे हैं।

इसका मतलब यह होगा कि लेखक त्रोआस में समूह में शामिल हो गया और उन्हें फिलिप्पी में छोड़ दिया। फिर, प्रेरितों के काम 20, पद 5 में, छोटे अंश फिर से शुरू होते हैं, और वे 21.18 तक चलते हैं, यानी एक अध्याय से ज़्यादा। यह तीसरी मिशनरी यात्रा है।

इसका प्रयोग अधिक बिखरा हुआ है, लेकिन ध्यान दें कि वी फिलिप्पी में शुरू होता है। इसलिए, यह फिलिप्पी में कुछ साल पहले समाप्त हो गया और अब फिलिप्पी में शुरू होता है। खैर, अगर आप सबसे सरल परिकल्पना लेते हैं, जो हमेशा सही नहीं होती है, तो सुझाव यह होगा कि पॉल ने फिलिप्पी में नए चर्च की मदद करने के लिए ल्यूक को छोड़ दिया और वह कई साल बाद भी वहाँ था जब पॉल फिलिप्पी से वापस आया।

यह फिलिप्पी से शुरू होकर यरुशलम में समाप्त होता है। संभवतः लेखक फिलिप्पी चर्च का प्रतिनिधि है जो उपहार के पैसे यरुशलम ले जाता है। हालाँकि, वह प्रतिनिधियों की सूची में अपना नाम नहीं बताता है, जब तक कि वह लूका न हो।

ऐसा लगता है कि लूका ने सुसमाचार में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में अपना नाम नहीं लिखा है। तीसरा छोटा सा अंश प्रेरितों के काम 27:1-28:16, रोम की यात्रा में है। यह अब दो साल बाद की बात है।

यह कहानी कैसरिया से शुरू होती है, जहाँ पॉल लगभग दो साल से जेल में है, और रोम में समाप्त होती है। इससे पता चलता है कि शायद लूका फिलिस्तीन में पॉल के साथ यरुशलम में रहा और फिर दो साल बाद कैसरिया में तीसरी मिशनरी यात्रा और रोम की चौथी यात्रा के बीच दो साल के लिए उससे मिला। मेरा सुझाव है कि शायद उसने इस समय का उपयोग सुसमाचार सामग्री पर शोध करने के लिए किया था जिसे उसने लिखा था। जब मैं लूका की तिथि का पता लगाने के लिए वहाँ गया था, तो मेरा सुझाव था कि उसने सुसमाचार के लिए सामग्री पर शोध किया था।

लूका ने इसे लिखा और रोम जाने से पहले इसे तैयार कर लिया, और यह पूर्व में प्रसारित होने लगा। हो सकता है कि जहाज़ के डूबने से उसकी प्रति खो गई हो, लेकिन हम यह नहीं जानते, इसलिए यह समझा सकता है कि क्यों सुसमाचार पूर्व की तुलना में पश्चिम में बाद में प्रसारित हुआ। यह सब अनुमान है, है न? हमारे पास एक अनिश्चित पाठ का अंश भी है जो प्रेरितों के काम 11:28 में है, जो पश्चिमी पाठ में आता है, और यह पॉल की पहली मिशनरी यात्रा से पहले अन्ताकिया में है।

यह अंश एंटिओक के भविष्यवक्ता अगबस को संदर्भित करता है, और यहाँ यह छोटा अंश शायद केवल एक प्रारंभिक परंपरा को दर्शाता है कि पॉल मूल रूप से एंटिओक से था या यदि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि कोडेक्स बिज़ा और पांडुलिपियों का पश्चिमी परिवार प्रेरितों के काम में प्रेरितों के काम के थोड़े अलग संस्करण का प्रतिनिधित्व करता है, तो हम नहीं जानते कि फिर यह ल्यूक की अपनी टिप्पणी भी हो सकती है कि वह एंटिओक में मौजूद था जब अगबस वहाँ दिखाई दिया।

उदारवादी इन छोटे अंशों की ताकत को यह कहकर कम आंकते हैं कि प्रेरितों के काम के लेखक, जिनके बारे में उन्हें लगता है कि वे ल्यूक नहीं हैं, ने एक डायरी का इस्तेमाल किया और सीधे उद्धरण के रूप में छोटे अंशों को निकाला। यह घटना की सबसे स्वाभाविक व्याख्या नहीं है, लेकिन ऐसी चीज़ें होती हैं।

खैर, हम आगे बढ़ते हैं। अभी भी ल्यूक, चिकित्सक के बारे में बात कर रहे हैं। ल्यूक एक यूनानी चिकित्सक है।

ल्यूक के चिकित्सा शब्दावली के उपयोग को देखते हुए, ल्यूक को संभवतः यूनानी चिकित्सा परंपरा में प्रशिक्षित किया गया था। हम इसके बारे में कुछ जानते हैं। प्राचीन काल के दो सबसे प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक तथाकथित हिप्पोक्रेटिक स्कूल से संबंधित थे।

हममें से ज्यादातर लोगों ने शायद कभी न कभी हिप्पोक्रेटिक शपथ सुनी होगी, यह वह शपथ है जो चिकित्सक लिया करते थे। मुझे यकीन नहीं है कि वे अब भी लेते हैं या नहीं, क्योंकि उनमें से एक यह है कि जब वे लोगों को ठीक करने की कोशिश कर रहे हों तो उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। हिप्पोक्रेटिक स्कूल के दो सबसे मशहूर चिकित्सक हैं हिप्पोक्रेट्स, जो खुद चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के थे और गैलेन, जो दूसरी शताब्दी ईस्वी के थे, यानी ल्यूक के समय के बाद।

हिप्पोक्रेटिक स्कूल के कुछ लेखन आज भी उपलब्ध हैं। हम हमेशा नहीं जानते कि किसने विशेष रूप से लिखा है, और वे हमें उनकी सामान्य प्रक्रियाएं बताते हैं। ये लोग और उनके सहयोगी प्रसिद्ध थे, जो प्राचीन काल में चिकित्सा करने के कई अन्य तरीकों से अलग है, और अवलोकन और अनुमान द्वारा निदान के लिए जाने जाते थे।

ग्रीको-रोमन दुनिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण, हम क्या कहें, चिकित्सा आंदोलन उपचार के देवता, एस्कुलैपियस के मंदिरों में था, ग्रीक में एस्कुलैपियस और लैटिन में एस्कुलैपियस, और उनके निदान की विधि भविष्यवाणी द्वारा थी। लेकिन ग्रीक हिप्पोक्रेटिक स्कूल, अवलोकन द्वारा निदान, और फिर उससे निष्कर्ष निकालना, केस रिपोर्ट का सावधानीपूर्वक संग्रह करके, ताकि किसी विशेष स्थान या विशेष डॉक्टर के पास बहुत सारी केस रिपोर्ट लिखी हों, जिन्हें आप उनके साथ जाँच कर देख सकते हैं, ठीक है, लक्षण इस तरह दिखते हैं, उस मामले में क्या हुआ और ऐसा ही कुछ। और जैसे-जैसे आप उनमें से अधिक से अधिक प्राप्त करते हैं, आपको विभिन्न रोगों के उपचार के बारे में कुछ मूल्यवान जानकारी मिलनी शुरू हो जाती है।

इसलिए, केस रिपोर्ट और लक्षणों और उपचारों की सूची ने अनुभव बनाने में मदद की या कम से कम यह दिखाया कि विभिन्न प्रकार के मामलों में क्या नहीं करना चाहिए। हिप्पोक्रेटिक स्कूल सरल उपचारों के लिए भी जाना जाता था। वे कुछ हर्बल दवाओं का इस्तेमाल करते थे; वे आहार का इस्तेमाल करते थे, वे आराम करते थे, और वे जादू, छेद किए गए घावों पर गोबर लगाने, या मुर्गे के दांत या उस तरह की चीजों जैसी विदेशी चीजों से दूर रहते थे।

इन तरह की चीजों की एक अच्छी चर्चा एसआई मैकमिलन और उनके पोते डेविड स्टर्न की किताब में मिलती है, मेरा मानना है कि इनमें से किसी भी बीमारी पर नहीं। बाइबल की एक अच्छी चर्चा आपके कुछ अधिक विदेशी प्राचीन चिकित्सा के साथ तुलना करती है। हिप्पोक्रेटिक स्कूल को स्वच्छता के बहुत उच्च मानकों के लिए भी जाना जाता था।

खैर, ऐसा लगता है कि लूका के पास शायद यही पृष्ठभूमि थी। ऐसा लगता है कि उसने अपना सुसमाचार और कार्य लिखते समय उन लोगों का साक्षात्कार लिया था जिन्हें यीशु ने शायद चंगा किया था और शायद यह एक केस रिपोर्ट शैली में किया था, इसलिए कभी-कभी, उसने कई चिकित्सा शब्द दिए जो उसने अपने उपचार चमत्कारों में दिए थे। ठीक है, यहाँ लूका के बारे में कुछ अन्य सुझाव दिए गए हैं।

ल्यूक के गृहनगर, प्राचीन काल के यूसेबियस और जेरोम दोनों कहते हैं कि ल्यूक सीरियाई अन्ताकिया का निवासी था। दुनिया भर में बहुत सारे अन्ताकिया बिखरे हुए थे, लेकिन सीरिया में एक प्रसिद्ध है, जो, जैसा कि मैं कहता हूँ, उस भिन्नता को फिट करता है जो नए नियम के पश्चिमी पाठ में दिखाई देता है। खैर, अधिनियम 11.20 में हेलेनिस्ट शब्द का ल्यूक द्वारा उपयोग स्पष्ट रूप से यहूदियों के बजाय मूर्तिपूजकों को संदर्भित करता है।

और हो सकता है कि लूका का मतलब हेलेनिस्ट से कोई ऐसा व्यक्ति हो जो नस्ल के हिसाब से ग्रीक न हो लेकिन जिसने ग्रीक संस्कृति को अपनाया हो। और यह कई अलग-अलग शहरों के लिए सही होगा, लेकिन यह एंटीओक के लिए भी सही होगा, जहाँ आपके पास बहुत से सीरियाई लोग थे जिन्होंने ग्रीक संस्कृति को अपनाया था, और हेलेनिस्ट भी थे, लेकिन वे हेलेनिस्टिक यहूदी नहीं थे, ठीक है? तो, आपके पास यह समस्या है कि 11:20 में उस विशेष अंश में हेलेनिस्ट या ग्रीक का अनुवाद करें या नहीं। हेलेनिस्ट को पढ़ना निश्चित रूप से कठिन है। विलियम रैमसे, जिन्होंने पॉल पर बहुत काम किया है, ने सोचा कि लूका फिलिप्पी से था, क्योंकि यहीं पर लूका को छोड़ा गया था और यहीं से उसे बाद में उठाया गया था।

बेशक, यह संभव है, लेकिन इसके लिए कोई विशेष कारण नहीं है। पॉल ने स्पष्ट रूप से अपने सहयोगियों का उपयोग अपने शुरुआती चर्चों और इस तरह के काम में मदद करने के लिए किया होगा। रैमसे ने यह भी दावा किया कि ल्यूक पॉल के मैसेडोनियन दर्शन का कारण था।

आप यहाँ रैमसे में थोड़ा सा तर्कवादी दृष्टिकोण देखते हैं, कि पॉल ने ल्यूक से मुलाकात की थी, और इसलिए उस रात उसके बारे में सपना देखा और उसके साथ मैसेडोनिया चला गया, आदि। मैं कहूँगा कि यह विचार बहुत ही असंभव लगता है, हालाँकि ल्यूक त्रोआस में कथा में अचानक प्रकट होता है। यदि ल्यूक अन्ताकिया से है, तो जाहिर है, वह या तो त्रोआस में संयोग से पॉल से मिलता है या शायद अन्ताकिया चर्च द्वारा पॉल को खोजने और शायद उसकी मिशनरी यात्रा में मदद करने के लिए पैसे या उस तरह की कोई चीज़ लाने के लिए भेजा गया है।

लूका के बारे में एक और सुझाव यह है कि लूका टाइटस का भाई है। अलेक्जेंडर सॉटर ने यह सुझाव दिया है, और वह इसे 2 कुरिन्थियों 8:18 पर आधारित करता है, जिसमें कहा गया है कि उस आयत में उल्लिखित भाई का अनुवाद उसके भाई के रूप में किया जा सकता है। यहाँ NASU में यह अंश कैसा दिखता है।

पॉल कहते हैं, " हमने उनके साथ भेजा है, और वह अभी कुछ समय पहले तीतुस का जिक्र कर रहे थे। हमने उनके साथ उस भाई को भेजा है जिसका नाम सुसमाचार में सभी कलीसियाओं में

फैल गया है।" इसलिए, सॉटर ने नोट किया कि तीतुस पॉल के पत्रों में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, लेकिन अजीब बात यह है कि प्रेरितों के काम में उसका कभी उल्लेख नहीं किया गया।

उनका सुझाव है कि यह उस घटना के समान है जिसे हम जॉन के सुसमाचार में देखते हैं, जिसमें लेखक ने कभी भी खुद या अपने भाई जेम्स का उल्लेख नहीं किया है। फिर सॉटर सुझाव देते हैं कि ल्यूक खुद के सभी संदर्भों को कम करता है और जाहिर तौर पर महसूस करता है कि उसके भाई के संदर्भ भी उस पर ध्यान आकर्षित करेंगे। खैर, यह फिर से काफी अटकलें हैं क्योंकि पॉल अन्य लोगों को भाइयों के रूप में संदर्भित करता है और अक्सर आध्यात्मिक रूप से इस शब्द का उपयोग करता है।

खैर, यह हमें लूका के उद्देश्य और विधि के प्रश्न पर लाता है। उद्देश्य, हमें लूका में एक स्पष्ट कथन मिलता है। यह पहले चार छंदों में है।

लूका का उद्देश्य थियोफिलस को, वह व्यक्ति जिसे, पहले मामले में, वह लूका का सुसमाचार लिख रहा है, यह जानने देना है कि उसे जो सिखाया गया है उसकी निश्चितता या विश्वसनीयता क्या है। तो, थियोफिलस को स्पष्ट रूप से कम से कम ईसाई धर्म की मूल बातें सिखाई गई हैं। इसलिए, लूका का उद्देश्य, प्रस्तावना में दिया गया है, लूका 1: 1-4, जो ग्रीक में लिखा गया है, उसके सामान्य लेखन की तुलना में और भी अधिक वर्गीकृत, सावधान, हेलेनिस्टिक शैली का है।

प्रस्तावना उस समय के अन्य प्रस्तावनाओं और अन्य इतिहासों की तुलना में संक्षिप्त है, लेकिन फिर वह एक खंड का इतिहास लिख रहा है, और जोसेफस सात खंड या बीस खंड का इतिहास या ऐसा ही कुछ लिख रहा है। हालाँकि, प्रस्तावना वही जानकारी देती है और यह समझने के लिए एक समर्पण के रूप में कार्य करती है कि काम कैसे और क्यों किया गया था। उदारवादी विश्वसनीय शब्द के बारे में चिंतित हैं क्योंकि इसका तात्पर्य है कि किसी ने लगभग 60 ईस्वी में यीशु का यथासंभव सटीक इतिहास लिखने का प्रयास किया।

अगर लूका सफल होता है, तो उदार धर्मशास्त्र बेकार हो जाएगा। सबसे उत्कृष्ट, थियोफिलस के लिए एक शीर्षक के रूप में इस्तेमाल किया गया, सरकारी अधिकारियों को दिया जाने वाला एक शीर्षक है। इस तरह का उपयोग प्रेरितों की पुस्तक में देखा जाता है और कई अन्य प्राचीन यूनानी पुस्तक समर्पणों में भी देखा जाता है।

उदाहरण के लिए, गैलेन के लेखन और डायोक्लेटस को लिखे गए आरंभिक ईसाई पत्र दोनों में इस तरह की बातें हैं। थियोफिलस ईसाई हो भी सकता है और नहीं भी। उसका नाम वह है जिसे हम थियोफोरिक या ईश्वर-वाहक नाम कहते हैं, थियोफिलस, ईश्वर का प्रेमी, और इसलिए कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, यह सिर्फ एक रूपक नाम है, क्योंकि मैं यह पुस्तक उन सभी लोगों को भेज रहा हूँ जो ईश्वर से प्रेम करते हैं।

संभवतः, ग्रीको-रोमन दुनिया में एक रूपक अनसुना नहीं है, फिर भी उनके जैसे ईश्वर-वाहक नाम ग्रीक और यहूदी संस्कृतियों में आम थे। इसलिए, हम पुराने हिब्रू और पुराने नियम में बहुत सारे ईश्वर-वाहक नामों के बारे में सोच सकते हैं और नए नियम में भी उसी तरह के हिब्रू नामों के

बारे में सोच सकते हैं। वास्तव में हमारे पास नए नियम में बहुत सारे ईश्वर-वाहक नाम हैं जो स्पष्ट रूप से वास्तविक नाम भी हैं।

1 जॉन में उनमें से तीन हैं, गयुस, जो जाहिर तौर पर गैया, पृथ्वी माता, और डायोट्रेफेस से जुड़ता है, जिसे ज़ीउस, डेउस ट्रेफेस द्वारा पोषित किया जाता है, और दूसरा क्या है? यह मेरे दिमाग से नहीं आ रहा है। इसलिए मैंने यहाँ नोट्स बनाए हैं। मुझे ये चीजें याद नहीं हैं।

लेकिन वैसे भी, ये तीन में से दो हैं। इसलिए, हम वास्तव में यह तर्क नहीं दे सकते कि यह व्यक्ति केवल उसके नाम की व्युत्पत्ति के आधार पर काल्पनिक है। संभवतः, किसी भी मामले में, लूका के मन में इस सुसमाचार के लिए एक व्यापक प्रसार था।

उनका लक्षित व्यापक पाठक वर्ग संभवतः शिक्षित गैर-यहूदी लोग हैं। इसलिए, वे एक अच्छी शैली में लिखते हैं और निश्चित रूप से ग्रीक भाषा में लिखते हैं। लूका की प्रस्तावना हमें न केवल उनके उद्देश्य के बारे में बल्कि उनकी पद्धति के बारे में भी बताती है।

हमें बताया गया है, सबसे पहले, कि ल्यूक को लेखन के समय अपने विषय की स्थिति के बारे में पता था। कई लोगों ने हिसाब-किताब तैयार करने का बीड़ा उठाया है। खैर, यह किस बारे में है? खैर, जहाँ तक विहित सुसमाचारों का सवाल है, इस समय दो से ज़्यादा नहीं लिखे जा सकते थे।

जॉन निश्चित रूप से बाद में है, और यदि आप चाहें तो ल्यूक तीसरा लिख रहा है। तो, कई का क्या मतलब है? यह संभवतः विहित सुसमाचारों को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि इस तथ्य को संदर्भित करता है कि प्रेरित पहले इज़राइल में और फिर रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग में यात्रा कर रहे थे। लोग जो कह रहे थे उससे उत्साहित थे और पीटर या पॉल या किसी और ने एक विशेष स्थान पर जो कहा था उसे लिखने की कोशिश की।

और सिर्फ़ कुछ किस्से सुनकर, मैं वास्तव में कुछ भी संतोषजनक नहीं बना पा रहा हूँ क्योंकि उनके पास पर्याप्त जानकारी या कनेक्शन नहीं है। और यही मेरा सुझाव है कि वहाँ क्या हो रहा है। ल्यूक कहते हैं कि उन्होंने खुद सभी संबंधित सामग्रियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था।

वह कहता है कि उसने शुरू से ही उनका अध्ययन किया, जो संभवतः विषय-वस्तु का संदर्भ है, न कि ल्यूक का शुरू से ही यीशु के साथ होना। यह संभव है, लेकिन मुझे लगता है कि यह संभव नहीं है। ल्यूक ने सबसे शुरुआती सांसारिक घटनाओं से शुरुआत की है।

वह जॉन द बैपटिस्ट के जन्म के लिए जकर्याह को दिए गए घोषणा पत्र आदि पर वापस जाता है। वैकल्पिक रूप से वह आरंभिक स्थान, फिलिस्तीन का भी अर्थ ले सकता है। कोई व्यक्ति घटनाओं को जीकर या बाद में उपलब्ध डेटा का सावधानीपूर्वक अध्ययन करके इतिहास का निर्माण कर सकता है।

सामान्य ऐतिहासिक पद्धति बाद में उपलब्ध डेटा का अध्ययन करने के लिए होती है, क्योंकि बहुत से लोग घटनास्थल पर नहीं होते हैं, आमतौर पर किसी विशेष चीज़ में। इसलिए, लूका ऐसा कर रहा है, लेकिन हम देखते हैं कि लूका ने, तीसरे, प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवकों के रूप में

नामित एक समूह द्वारा वितरित सामग्री का उपयोग किया। इन लोगों में स्पष्ट रूप से प्रेरित और अन्य पूर्णकालिक कार्यकर्ता शामिल होंगे, जैसे कि शायद 70 या इतने ही लोग जो प्रत्यक्षदर्शी भी थे।

दोनों शब्दों के लिए एक ही निश्चित उपपद का उपयोग यह दर्शाता है कि समूह को एक इकाई के रूप में देखा जाता है जिसमें दोनों योग्यताएँ हैं। मैं इस पर बहुत ज़ोर नहीं दूँगा, लेकिन वह इसे एक समूह के रूप में देख रहा है। ल्यूक ने संभवतः कई लोगों का साक्षात्कार लिया जो चंगे हुए थे या जो उन विभिन्न अवसरों पर मौजूद थे जिनका वर्णन उसने किया है।

मेरा सुझाव है कि लूका ने भी मरियम का साक्षात्कार लिया होगा क्योंकि लूका और जन्म सामग्री में मरियम का दृष्टिकोण है। यह संभव है कि वह 50 के दशक में अभी भी जीवित हो, शायद उस समय तक उसकी उम्र 70 या 80 वर्ष रही होगी। फिर लूका हमें बताता है कि उसने एक व्यवस्थित, अनुक्रमिक, सटीक विवरण लिखा है, और यह ईसाइयों के लिए एक प्रोत्साहन होना चाहिए।

जाहिर है, ऊपर बताए गए सभी दावे उदारवादियों को फिर से परेशान कर रहे हैं। हमें बताया गया है कि यह सुसमाचार ग्रीक भाषा में प्रशिक्षित बौद्धिक गैर-यहूदी द्वारा लिखा गया है, जिन्होंने प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों की व्यक्तिगत रूप से जांच की थी। यह काफी चौंकाने वाला है।

तो, इससे बचने का सामान्य तरीका यह है कि, ठीक है, सभी लेखक अपनी सामग्री के सामने इस तरह की चीजें डालते हैं। लेकिन जहां ल्यूक परीक्षण योग्य है, वह काफी प्रभावशाली साबित हुआ है - ल्यूक की कुछ विशेषताएं।

लूका के सुसमाचार के महत्व। ऐसी कई विशेषताएं हैं जिनके बारे में हम कह सकते हैं कि वे लूका के सुसमाचार के महत्व प्रतीत होती हैं। मैं यहाँ सार्वभौमिकता का उल्लेख करने जा रहा हूँ।

यह यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट चर्च के अर्थ में नहीं है, जहाँ हर किसी को बचाया जाएगा, बल्कि सार्वभौमिकता में है। सुसमाचार सभी प्रकार के लोगों के लिए है। यह सिर्फ यहूदियों के लिए नहीं है।

यह सिर्फ मध्यम वर्ग या धनी लोगों आदि के लिए नहीं है। लूका ने यहूदियों और गैर-यहूदियों, अमीर और गरीब, पुरुषों और महिलाओं, सम्मानित लोगों और बहिष्कृत लोगों दोनों पर असामान्य रूप से ज़ोर दिया है। वास्तव में, लूका समाज के बहिष्कृत लोगों के प्रति यीशु के दयालु रवैये पर ज़ोर देता है।

कुख्यात पापियों, कोढ़ियों, सामरियों, वेश्याओं, कर वसूलने वालों, इत्यादि के प्रति। लूका ने प्रार्थना पर भी महत्वपूर्ण जोर दिया है। यीशु की प्रार्थनाएँ और प्रार्थना पर यीशु के दृष्टांत लूका में किसी भी अन्य सुसमाचार की तुलना में अधिक शामिल हैं।

ल्यूक ने सामाजिक रिश्तों पर काफी जोर दिया है, खास तौर पर धन और गरीबी पर। ल्यूक ने इन खास रिश्तों पर क्यों जोर दिया? हमें नहीं पता। हम वहाँ नहीं हैं।

शायद इसलिए क्योंकि ये उनके श्रोताओं को पसंद आएंगे। शुरुआती यूनानी दार्शनिकों प्लेटो, अरस्तू, सुकरात आदि के विपरीत, नए नियम काल के यूनानी दार्शनिक नैतिकता से बहुत चिंतित थे। उस काल के कई सुसंस्कृत यूनानी भी नैतिकता में रुचि रखते थे और वे जो कुछ भी सही ढंग से देखते थे, उससे नाखुश थे, मुझे लगता है, जैसे रोम की व्यभिचारिता और गरीब लोगों को कुचलना आदि।

तो, शायद यही हम यहाँ देख रहे हैं। जैसे हम मैथ्यू के लिए कुछ अद्वितीय सामग्री का रेखाचित्र बनाते हैं, वैसे ही हम यहाँ ल्यूक के लिए कुछ अद्वितीय सामग्री का रेखाचित्र बनाते हैं। सबसे पहले, और कुछ हद तक आश्चर्यजनक रूप से, ल्यूक में मैथ्यू की तुलना में बहुत अधिक गैर-यहूदी सुसमाचार है, कुछ सेमिटिक प्रशंसा भजनों को संरक्षित करता है।

ये वास्तव में बहुत सेमिटिक हैं, हालाँकि अन्यथा ल्यूक का सुसमाचार चार सुसमाचारों में से सबसे कम सेमिटिक है। इन विशेष प्रशंसा भजनों के लिए दिए गए लैटिन नाम उनके पाठों के पहले शब्दों से लिए गए हैं और संभवतः ग्रीक से लैटिन में अनुवादित किए गए हैं और पुस्तकों और कार्यों और उस तरह की चीज़ों के नामकरण के एक प्रकार के हिब्रूवादी तरीके का प्रतिनिधित्व करते हैं। तो, ल्यूक 1:46-55 में मैग्निफिकैट है।

मैरी को इस बात की चिंता है कि एलिज़ाबेथ के घर में उसका स्वागत कैसे होगा और उसका स्वागत बहुत अच्छे से हुआ क्योंकि एलिज़ाबेथ को पहले से ही पता है कि मैरी को गुप्त रूप से क्या बताया गया है और जॉन बैपटिस्ट मैरी के अभिवादन पर उसके गर्भ में कूद पड़ता है। इसलिए, मैरी ईश्वर की स्तुति करती है और मैग्निफिकैट, लैटिन में स्तुति के लिए, ठीक है, मैं स्तुति करता हूँ। फिर बेनेडिक्टस है, ल्यूक 1:68-79 जहाँ जकर्याह जॉन के जन्म के बाद ईश्वर की स्तुति करता है और ल्यूक 2:14 का ग्लोरिया, यीशु के जन्म पर स्वर्गदूतों के शब्द, सर्वोच्च में ईश्वर की महिमा, आदि।

यह वास्तव में तकनीकी रूप से एक भजन होने के लिए थोड़ा छोटा है, लेकिन भजनों में अक्सर होने वाले इस तरह के परहेजों के साथ अच्छी तरह से फिट होगा। और फिर, चौथा, नबूकदनेस्सर अब लूका 2:29-32 में विदा हो जाता है। यीशु को देखने के बाद शिमोन की प्रार्थना उसे बताई गई थी कि वह अपनी मृत्यु से पहले मसीहा को देखेगा और अब उसने शिशु यीशु को संभाला है और विदा होने के लिए तैयार है। लूका का सुसमाचार इसमें दृष्टान्तों के होने में विशिष्ट नहीं है, तीनों समकालिक सुसमाचारों में दृष्टान्त हैं और यूहन्ना के सुसमाचार में वही है जो प्रभावी रूप से एक ही बात है, हालाँकि वह जहाँ उनका उल्लेख करता है वहाँ परोइमिया शब्द का उपयोग करता है।

सुसमाचारों में दो सामान्य प्रकार के दृष्टान्त हैं, जिन्हें हम कहानी दृष्टान्त कह सकते हैं, जो कि दो स्तरों के रूप में स्वर्गीय अर्थ वाली सांसारिक कहानियों के वाक्यांश द्वारा पर्याप्त रूप से चित्रित किए जाते हैं, अक्सर एक धर्मनिरपेक्ष कहानी और फिर एक आध्यात्मिक महत्व जो इसका होता है।

गेहूँ और जंगली घास ऐसी ही एक सांसारिक कृषि कहानी की तरह होगी, जिसमें एक ज़मींदार का दुश्मन उसकी फसल को बर्बाद करके उससे बदला लेने की कोशिश करता है और फिर भी

यह सुसमाचार की प्रगति के बारे में जानकारी देता है। और फिर दृष्टांतात्मक दृष्टांतों को उदाहरण दृष्टांत या प्रतिमान दृष्टांत भी कहा जाता है, ये ल्यूक के लिए अद्वितीय हैं, मैथ्यू में एक संभावित उम्मीदवार है, मैथ्यू 12:43-45 और निश्चित रूप से इसके समानांतर एक पुराना नियम है, लेकिन ये भौतिक से आध्यात्मिक या धर्मनिरपेक्ष से धार्मिक या कुछ और में अर्थ स्थानांतरित नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे संचालन में आध्यात्मिक सत्य का एक नमूना चित्रित करते हैं और हमें संदर्भ में संकेतों द्वारा सिद्धांत को सामान्यीकृत करना है।

इन प्रतिमानों या नमूना दृष्टांतों के कुछ उदाहरण द गूड सेमेरिटन ऑगस्टीन ने इसे एक कहानी के दृष्टांत के रूप में बनाने की कोशिश की जिसमें एक आदमी एडम के रूप में यरूशलेम से जेरिको जा रहा था और चोरों के बीच में पड़ गया, वह शैतान द्वारा हमला किया गया और यीशु अच्छा सामरी था और चर्च सराय है और वह तेल और इस तरह की शराब के कुछ पवित्र उपयोगों पर काम करता है, लेकिन संदर्भ स्वयं इंगित करता है कि मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक नमूना है कि पड़ोसी होने का क्या मतलब है, किसी के प्रति पड़ोसी के रूप में कार्य करने का क्या मतलब है और फरीसी के सवाल का जवाब है कि मेरा पड़ोसी कौन है? जवाब है कोई भी जिसे ज़रूरत है और सिद्धांत यह है कि तुम भी वैसा ही करो। तो, नमूना दृष्टांत का एक अच्छा उदाहरण है। पड़ोसी कैसे बनें, इस विशेष विनाशकारी घटना का एक नमूना

एक और उदाहरण है लाजर का अमीर आदमी, जो मृत्यु के बाद क्या होता है, इसका एक नमूना है और एक विशेष नमूना लगभग उतना ही गरीब आदमी चुनता है जितना आप कल्पना कर सकते हैं और साथ ही लगभग उतना ही अमीर आदमी चुनता है जितना आप कल्पना कर सकते हैं और सुझाव देता है कि जब वे मरते हैं तो उनकी स्थिति उलट जाती है, इससे पहले कि अमीर आदमी अपने महल के अंदर दावत कर रहा हो और गरीब लाजर कुत्तों और घावों आदि के साथ बाहर हो और फिर अचानक मृत्यु के साथ लाजर अब्राहम की गोद में दावत कर रहा है, ठीक वैसे ही जैसे जॉन प्रभु के भोज में यीशु की गोद में था। अगर आप चाहें तो पहले वाला अमीर आदमी बाहर भीख मांग रहा है। खैर, ऐसे लोग हैं जो इसे कहानी का दृष्टांत बनाना चाहते हैं, गवाह निश्चित रूप से ऐसा करते हैं ताकि वे नरक और मृत्यु और पुनरुत्थान आदि के बीच सचेत अस्तित्व के विचार से छुटकारा पा सकें। फरीसी और चुंगी लेने वाला गर्व और विनम्रता का एक नमूना है। अमीर मूर्ख उन लोगों का एक नमूना है जो अगले जीवन के लिए कोई तैयारी नहीं करते हैं।

थोड़ा अलग लेकिन मैं लूका 14:7-11 में भोज की सीटों के दृष्टांत को इसी श्रेणी में रखूंगा, जो स्वार्थ के परिणाम का एक नमूना है। एक व्यक्ति स्वार्थी रूप से भोज में एक बड़ी जगह हथियाने की कोशिश करता है लेकिन ऐसा होता है कि मेजबान ने उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण किसी को आमंत्रित किया है और इसलिए उसे बाहर कर दिया जाता है और जब तक ये सभी अन्य सीटें भर जाती हैं, तब तक वह नीचे की सीट पर चला जाता है, अगर आप चाहें तो। इसी संदर्भ में दूसरा उदाहरण भोज का मेजबान लूका 14:16-24 आतिथ्य का एक नमूना है।

आप अपने भोज में किसे आमंत्रित करते हैं? सभी अमीर लोग आपको पैसे नहीं लौटाएंगे, आपके सभी दोस्त आपको पैसे नहीं लौटाएंगे, लेकिन गरीब लोग जो आपको पैसे नहीं लौटा सकते, तो क्या होगा? खैर, भगवान आपको इससे कहीं बेहतर तरीके से पैसे लौटाएंगे, है ना? इस प्रकार का

दृष्टांत केवल लूका के लिए ही क्यों विशिष्ट है? मुझे नहीं पता कि उदारवादी कहते हैं कि परंपरा के विभिन्न क्षेत्रों ने विभिन्न प्रकार के दृष्टांतों और विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का आविष्कार किया, लेकिन इससे वास्तव में समस्या का समाधान नहीं होता है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि प्रारंभिक चर्च में ऐसे अलग-थलग समूहों में शायद एक बेहतर मॉडल यह हो कि यीशु आविष्कारशील थे और उन्होंने विभिन्न श्रोताओं के लिए विभिन्न प्रकारों और शैलियों का उपयोग किया। लूका ने स्पष्ट रूप से इस सामग्री पर जोर दिया क्योंकि वह इसे विशेष रूप से सराहते थे। इसकी संपन्नता और गरीबी और उस प्रकार की चीजें वहां काफी मजबूती से दिखाई देती हैं।

कुछ चमत्कार ऐसे हैं जो लूका के लिए अद्वितीय हैं। वे चमत्कार आमतौर पर महिलाओं से संबंधित होते हैं, यीशु नाईन की विधवा के बेटे को जीवित करते हैं, दुर्बलता से झुकी हुई स्त्री को चंगा करते हैं, आदि और फिर एक खंड जो काफी अनूठा है, यदि आप चाहें, तो वह है पैरियन मंत्रालय की कथा। पैरिया, जोर्डन नदी के पूर्व में मुख्य रूप से यहूदी क्षेत्र है, संभवतः बेबीलोन की कैद के बाद, क्षमा करें, निर्वासन से लौटने के बाद या मैकाबीन काल के बाद भी यहूदियों से काफी अधिक आबादी थी। खैर हम लूका की एक त्वरित रूपरेखा देते हैं और इसके साथ ही समकालिक सुसमाचारों की विशेषताओं पर हमारी सामग्री समाप्त होती है लूका के पास बस चार छंदों की एक छोटी प्रस्तावना है, लेकिन अन्य किसी भी सुसमाचार में ऐसा कुछ नहीं है।

शायद मार्क के सामने का शिलालेख, यीशु मसीह, ईश्वर के पुत्र के सुसमाचार की शुरुआत, अगर आपको पसंद है तो जन्म और शिशु अवस्था, जो कम से कम संरचना और स्थान में मैथ्यू के समान है, लेकिन इसमें जॉन का शिशु जन्म और शिशु अवस्था भी शामिल है और फिर तैयारी अनुभाग में वंशावली है मैथ्यू ने अपनी वंशावली को सामने रखा है फिर हमारे पास गैलीलियन मंत्रालय है और यह अध्याय 4 के मध्य से अध्याय 9 के अंत तक है और फिर एक बड़ा खंड है, यरूशलेम की यात्रा और पारियन मंत्रालय के दस अध्याय हैं अन्य सभी में यरूशलेम की यात्रा के लिए एक बेहतर अध्याय है और पारियन मंत्रालय का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है लूका के पास लगभग तीन अध्याय हैं, पिछले सप्ताह के दो अध्याय और विश्वासघात परीक्षण और क्रूस पर चढ़ने पर दो अध्याय और पुनरुत्थान पर एक अध्याय और उन क्षेत्रों में अन्य समकालिकताएँ बहुत मजबूती से समानांतर हैं।

खैर, यह समकालिक सुसमाचारों की विशेषताओं के बारे में हमारा त्वरित दौरा है और मुझे लगता है कि हम अब यहीं रुकेंगे। आपके ध्यान के लिए धन्यवाद